Impact Factor 6.261 ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019 Special Issue – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

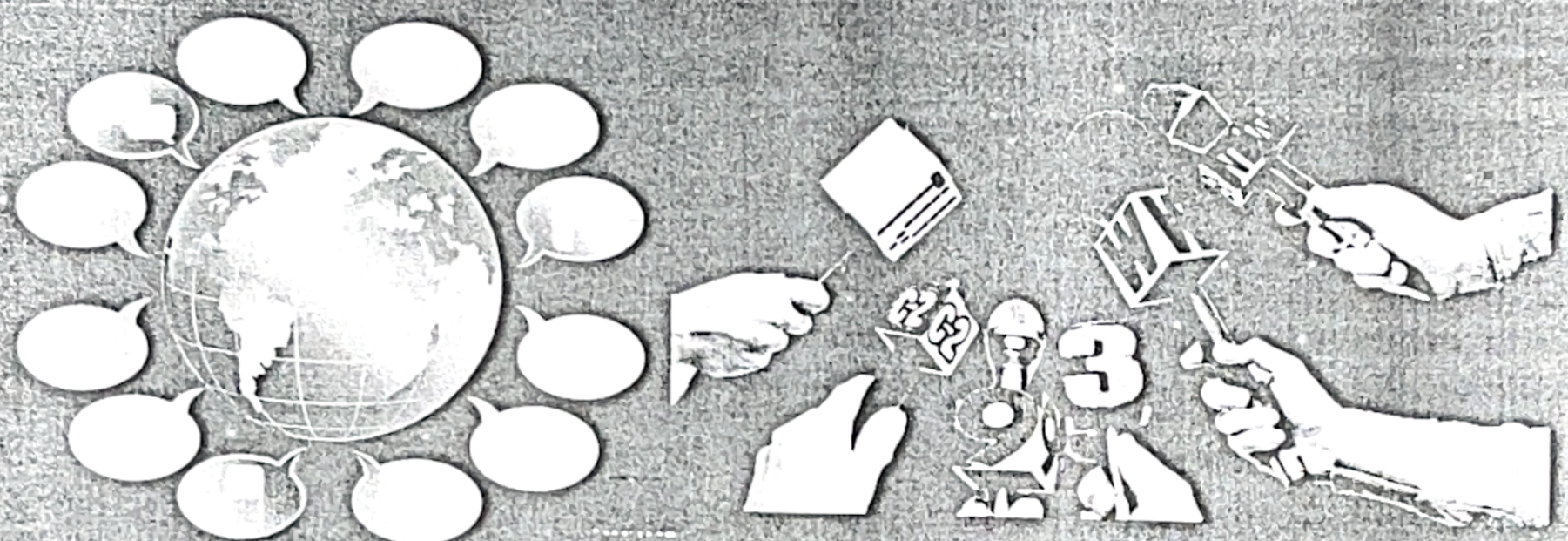

Chief Editor
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of this Issue
Dr. Anil Kale
Asso. Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
Visit to - www.researchjourney.net

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2019

SPECIAL ISSUE – 91

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of This Issue
Dr. Anil Kale
Asso.Prof. & Head of Hindi Dept.
GM'S Arts, Commerce & Science College,
Narayangaon, Tal. Junnar, Dist. Pune
(Maharashtra)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net
© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 400/-

38. सरकारी कार्यालय में हिंदी की आवश्यकता.....	डॉ.प्रविण तुळशीराम तुपे	118
39. जनसंचार एवं तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता..... विज्ञापनों में हिंदी भाषा का सशक्त योगदान	कांचन शेंदुर्णीकर ,	120
40. जनसंचार के माध्यम : विज्ञापन और हिंदी.....	डॉ.योगेश विठ्ठल दाणे	123
41. हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृष्य	डॉ. भाऊसाहेब नवले	127
42. मीडिया, समाज और हिंदी	डॉ. मिलिंद कांबळे	130
43. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	सौ. योगिता अमोल देशपांडे	132
44. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी	कु. छाया रत्नाकर पांढरकर	134
45. नवइलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं हिंदी अध्यापन	डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर	137
46. फिल्म क्षेत्र और हिंदी	श्रीम. जयश्री अर्जुन माथेसुळ	139
47. हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ	प्रा.पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत	142
48. हिन्दी के विकास में नवइलैक्ट्रानिक माध्यमों का योगदान	आर. अरूणा	145
49. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	अश्विनी महादेव जाधव	148
50. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी भाषा (मुद्रित, श्रव्य, दृकश्रव्य माध्यम).....	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	150
51. इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम और हिंदी.....	सौ. विद्या शामराव चौगले	153
52. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	अंबेकर वसीम	156
53. जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता	प्रा. शोभा कोकाटे	159
54. जनसंचार माध्यमों में रेडियो	राजेंद्र विट्ठल वरप	161
55. विज्ञापन : जनसंचार का सशक्त माध्यम.....	प्रा. बी. एस भुजाडे	163
56. हिंदी के विकास में टेलिविजन का योगदान.....	सरला सूर्यभान तुपे	165
57. विज्ञापन क्षेत्र और हिंदी (मुद्रित, श्रव्य, दृक श्रव्य)	कविता दत्तु चव्हाण	167
58. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी	अविनाश मारूती कोल्हे	170
59. जनसंचार माध्यम में हिंदी : रोजगार के अवसर	डॉ. शरद भा. कोलते	172
60. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	श्रीगीरे जयश्री बालाजी	175
61. जनसंचार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. रवीन्द्र सिंह	180
62. जनसंचार एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विविध आयाम–एक दृष्टि....	डॉ. प्रीति आत्रेय	183
63. जनसंचार माध्यमों में हिंदी की उपादेयता.....	डॉ. भगत सारिका	185
64. हिंदी फिल्म, साहित्य व समाज	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	188
65. जनसंचार के माध्यम प्रिंट मीडिया के विकास में हिन्दी का योगदान.....	डॉ. अर्चना चतुर्वेदी	190
66. इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया और हिंदी	डॉ. नानासाहेब जावळे	192
67. नव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी (कम्प्यूटर और इंटरनेट प्रणाली के विशेष संदर्भ में)	गणेश ताराचंद खैरे	195
68. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी की उपादेयता..... (विज्ञापन के संदर्भ में)	प्रा. डॉ. मनाली सुर्यवंशी	198
69. नवइलेक्ट्रॉानिक मीडिया और हिंदी	प्रा. संदिप बळवंत देवरे	201
70. जनसंचार - माध्यम और सामाजिक जागरूकता.....	प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	203
71. भारत में हिंदी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. जालिंदर इंगले	206
72. अनुवाद : समकालीन संदर्भ में	डॉ. धन्या. के. एम	208
73. हिंदी जनसंचार माध्यम एवं रोजगार के अवसर.....	डॉ.राजाराम कानडे	210
74. अनुवाद क्षेत्र और हिंदी	प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके	213

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN- 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452, (GIF) –0.676 | January 2019 | UGC Approved No. 40705
Special Issue 91 , जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

जनसंचार एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता

अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अजीज
शोधछात्रा, प्राध्यापिका राधाबाई काळे महिला महाविद्यालय, अहमदनगर

संगाष्ठी के लिए दिये गए विषय शिर्षक में दो बिदू महत्वपूर्ण हैं। 1. जनसंचार एवं तकनीकी क्षेत्र 2. हिंदी की उपादेयता। उपर्युक्त दोनों बिंदुओं का विश्लेषण करने के लिए आवश्यक है कि जनसंचार के स्वरुप और कार्यपध्दति को समझा जाए।

1. जनसंचार का स्वरुप :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण वह समाज में रहकर एक–दूसरे के साथ अपनी भाव–भावनाओं, विचारों और अनुभवों को बाँटकर ही अपना मानसिक और आत्मिक विकास कर पाता हैं। वह अपने भावनाओं और विचारों को व्यक्त किये बिना जीवित नहीं रह सकता। इस जिज्ञासापूर्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का कांश हिस्सा 'संचार' करने में अर्थात् बोलने, सुनने, सोचने, देखने, पढ़ने–लिखने या विचार–विमर्श करने में लगाता हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि "अपने विचारों और भावों को हाव–भाव, संकेतों और वाणी के माध्यम से दूसरों तक पहुँचाना और आदान–प्रदान करना ही 'संचार' कहलाता हैं।"[1]

"संचार का सामान्य अर्थ है 'बहना', चलना तथा जानकारी को दूसरों तक पहुँचाना। वर्तमान व्यवहार में 'संचार' शब्द Communication शब्द क़ा पर्याय है। जिसका अर्थ हैं To make Common, to share, to import, to transmit अर्थात सूचनाओं के आदान–प्रदान से समान भागीदारी करना"[2] संचार की अनेक विद्वानों ने अपने–अपने मतानुसार परिभाषा की हैं, जिसका विवेचन निम्नांकित है–[3]

- वाणी, लेखन या संकेतों के द्वारा विचारों, अभियंतो अथवा सूचना का विनियम 'संचार' कहलाता है। – रॉबर्ट एंडरसन
- संचार वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सूचना व संदेश एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचे – थीयो हैमान
- यह एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसमें दो से अधिक व्यक्ति विचारों, तथ्यों अनुभवों और भावों का विनिमय करते हैं। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति संदेश का सामान्य ज्ञान प्राप्त करता हैं– जे पॉल लींगन्स
- मनुष्य के विचारों और भावनाओं के प्रसारण व आदान–प्रदान की प्रक्रिया ही 'संचार' हैं। – लीलैंड ब्राऊन
- संचार यह प्रक्रिया हैं, जिसके द्वारा स्त्रोत से श्रोता तक संदेश पहुँचता है – विल्बर श्राम
- आपसी समझ, विश्वास और बेहतर मानव संबंध स्थापित करने की दिशा में किया गया सूचनाओं व विचारों का आदान–प्रदान ही संचार है। – अमेरिकन सोसायटी ऑफ ट्रेडींग डायरेक्टर्स

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं का अध्ययन करने के बाद संचार की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है –

"किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अथवा कई व्यक्तियों का कुछ सार्थक चिन्हों, संकेतो और प्रतिकों के माध्यम से सूचना, जानकारी, ज्ञान या मनोभाव का आदान–प्रदान करना ही 'संचार' हैं।"

संचार का कार्य :

संचार एक गतिशील प्रक्रिया है जो एक–दूसरे के साथ संबंध जोडने में अत्यंत सहायक होती है। "एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक समूह को दूसरे समूह से और एक देश को दूसरे देश से जोडना संचार का कार्य है।"[4] समाज में संचार की क्रिया इसप्रकार होती हैं–

- सूचना एवं जानकारी देना : लोगों को विविध विषयों की जानकारी संचार के माध्यम से दी जाती है।
- समाजीकरण : संचार के कारण ही व्यक्ति, समूह तथा समाज का विकास होता हैं।
- संचार प्रेरक का कार्य करता है : संचार यह इच्छाओं और आकांक्षाओं को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करता है।
- शिक्षा : संचार के माध्यम से बौद्धिक कार्यक्रमों का प्रसार किया जाता है। जिससे व्यक्ति का बौद्धिक विकास और चरित्र–निर्माण होता है।
- सांस्कृतिक विकास : संचार के माध्यम से सांस्कृतिक तथा कलात्मक रचनाओं के प्रसार द्वारा अतीत की गौरवशाली परंपरा को बनाए रखने में सहायता मिलती है।
- मनोरंजन : व्यक्ति की मानसिक शारीरिक थकान को दूर करके उसका मनोरंजन करने का कार्य संचार करता है।
- विज्ञापन : आज के युग में व्यावसायिक अपनी उत्पादित वस्तु की अधिक से अधिक बिक्री करने के लिए संचार माध्यमों का उपयोग करता है।

संचार प्रक्रिया :

संचार प्रक्रिया सफलता से संपन्न होने के लिए इस प्रक्रिया में कुछ महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का होना अनिवार्य है। संचार के प्रमुखतः तीन तत्त्व होते है –[5]

1) व्यक्ति या स्त्रोत/संचारक (Source/Communicatare) जो संप्रेषण करता है।
2) अर्थपूर्ण संदेश (Massage) जिसका संप्रेषण किया जाता है।
3) संदेश प्राप्त करनेवाला (Receiver)

कुशल संचारक श्रोताओं की आवश्यकतानुसार बदलाव करता है तथा प्रभावशाली ढंग से संचार करने के लिए लगातार सुधार करता रहता है। उपरोक्त सभी तत्त्व एक सफल संचार प्रक्रिया के लिए आवश्यक होते हैं।

जनसंचार माध्यम :

संचार का क्षेत्र सीमित होता है लेकिन जैसे ही किसी सूचना या संदेश को अधिक लोगोंतक पहुँचाना होगा तो इसमें अधिक लोगोंकी भागीदारी बढ़ जायेगी और ये संचार माध्यम 'जनसंचार माध्यम' बन जायेंगे। इन जनसंचार माध्यमों को निम्न रूपमें वर्गीकृत किया जा सकता है –

प्रमुखतः इन्हें दो वर्गो में बाँटा जा सकता है – [6]

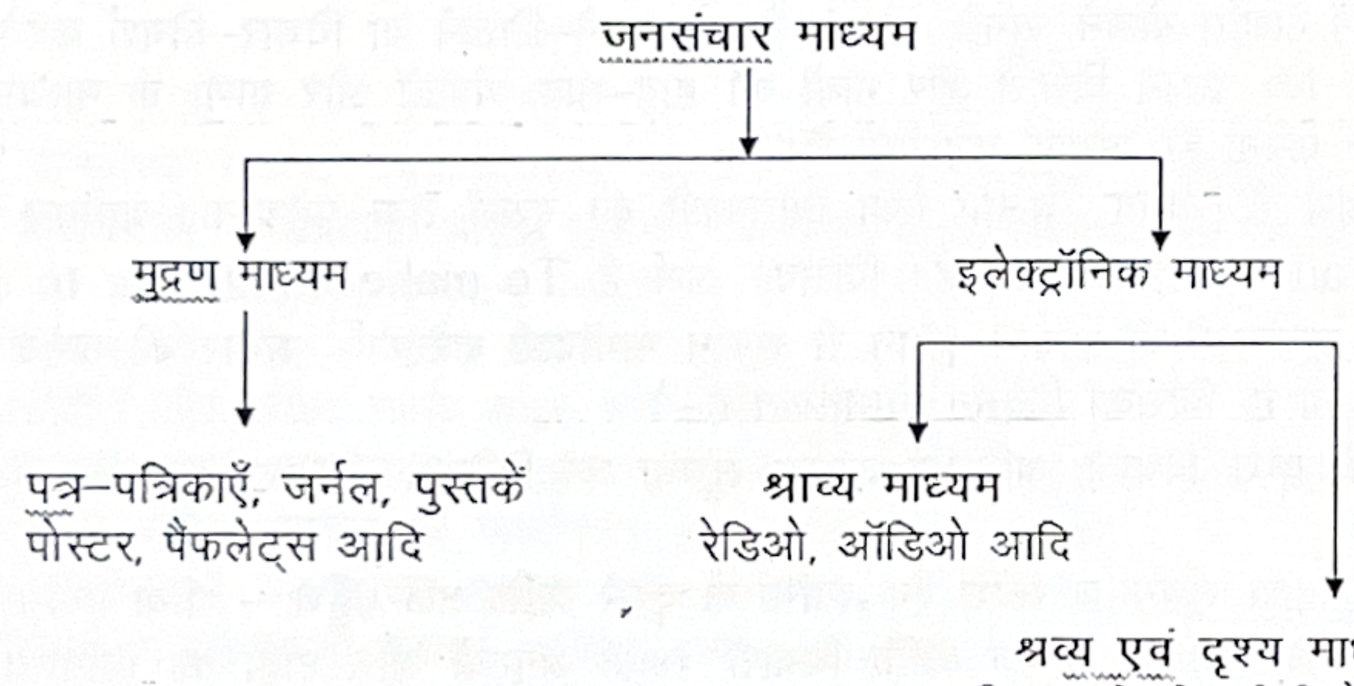

जनसंचार – विशेषतः तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की उपादेयता –

वास्तव में देखा जाए तो भाषा यह जनसंचार का सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। क्योंकि मानव–जाति की संस्कृति का आरंभ प्रथमतः मौखिक भाषा के माध्यम से और बाद में लिखने और पढ़ने की कला अवगत होने के बाद जनसंचार में क्रांती हुई और सांस्कृतिक मूल्यों का तेजीसे विकास होने लगा।

वैसे देखा जाए तो समस्त संचार में हजारों की संख्या में भाषाएँ बोली जाती हैं। लेकीन प्रत्येक भाषा की संचार–क्षमता का स्वरूप और व्यापकता की मर्यादा भिन्न–भिन्न है।

1) जहाँ तक हिन्दी भाषा का संबंध है, वह हमारे देश की ही नहीं बल्की विश्व की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। हिंदी भाषा में संचार की क्षमता अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक होने के कुछ महत्त्वपूर्ण कारण भी हैं। पहला महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि इस भाषा का उगम संस्कृत भाषा की परंपरा से हुआ है। "संस्कृत यह हमारी संस्कृति की अति समृद्ध भाषा है। उसके शब्दों में विभिन्न अर्थ और भाव को अभिव्यक्त करने की क्षमता अधिक है। इसी परंपरा का निर्वाह हिंदी भाषा ने किया है इसलिए इसमें अर्थवेत्ता और संचार की क्षमता अधिक है। इसीलिए देशभर के लोग इसे अपनाए हुए हैं।"[7]

2) हिंदी भाषा में इतर भाषाओं के शब्दों को, विविध भावों और विचारों को आत्मसात् करने की क्षमता अधिक है। केवल यही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष व्यवहार में इतर भाषाओं से अपनाए हुए शब्द हिंदी भाषा का अंग बनकर रह जाते हैं जिससे हिंदी भाषा समृद्ध है। अरबी, फारसी, तुर्की और बंगाली भाषा के शब्दों के साथ ही भारत के विभिन्न राज्यों और प्रान्तों में बोली जानेवाली कन्नड, तमिल, गुजराती जैसी अनेक दुष्कर भाषाओं के शब्द भी हिंदी भाषा ने आत्मसात किये हैं। [8]

3) रेडियो और हिंदी भाषा : आधुनिक जनसंचार माध्यमोंने इलेक्ट्रॉनिक तकनीक को अपनाकर अपना प्रभाव क्षेत्र अत्यंत विस्तृत कर लिया हैं। श्रव्य माध्यमों के अंतर्गत रेडियो में ही सबसे पहले इलेक्ट्रॉनिक तकनीक का प्रयोग हुआ है। रेडियो एक ऐसा श्रव्य माध्यम हैं जिसमें ध्वनि की सहायता से दूर के क्षेत्रों तक सूचना एवं समाचार का संप्रेषण संभव हो सकता है। हिंदी भाषा इस कार्य के लिए अत्यंत उपयोगी साधन है। हिंदी भाषा के माध्यम से रेडियो पर समाचार, गीत–संगीत, नाटक, फीचर प्रस्तुत होते रहते हैं। विशेष बात यह है कि छोटे से बड़े हर उम्र के लोग इसे पसंद करते हैं। पढ़े लिखे और बेपढ़लिखे लोग भी इसका आनंद लेते हैं। उदाहरणार्थ बीडी के कारखाने में बीडी बनानेवाली औरतें अपना काम जारी रखते हुए भी रेडियो के कार्यक्रमों से लाभान्वित होते रहते हैं। मनोरंजन के साथ उन्हें जानकारी भी

मिलती हैं।"रेडियो से प्रसारित विभिन्न सूचनात्मक, मनोरंजक एवं लोकप्रिय कार्यक्रमों मे हिंदी भाषा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान हैं। हिंदी भाषा में रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को सभी लोक सहजता से ग्रहण करते हैं।"[9]

4) दूरदर्शन और हिंदी भाषा : दूरदर्शन यह जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावशाली और सशक्त माध्यम माना जाता हैं। "दूरदर्शन में ध्वनि के साथ–साथ चित्रों के माध्यम से सूचना, समाचार एवं संदेश प्रसारित किए जाते हैं। जहाँ रेडियो की अपनी सीमाएँ थी वहीं दूरदर्शन के आविष्कार ने संचार जगत में अद्‌भत परिवर्तन लाया हैं।"10 हिंदी भाषा के माध्यम से भी दूरदर्शन पर अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं जिसे सभी स्तर के लोग पसंद करते हैं।

5) चलचित्र (Film) और हिंदी भाषा : चलचित्र, फिल्म अथवा सिनेमा जनसंचार का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम हैं। विश्व के जनमानस को सर्वाधिक प्रभावित करने की दृष्टि से चलचित्रों को अन्य संचार माध्यमों की अपेक्षा अधिक महत्त्व मिला है। समाज के आचार–विचार एवं जीवन–दर्शन पर फिल्मों का अचूक प्रभाव पड़ता है। इस वास्तविकता से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हिंदी भाषा यह फिल्मों की जान और लोकप्रियता का प्रमुख साधन हैं। हिंदी भाषा की मिठास और विशेषतः उसके कर्णमधुर गीत फिल्म देखनेवालों को प्रभावित करते हैं। फिल्मों के अधिक तर नाम और वार्तालाप भी ठेठ हिंदी में होने के कारण सर्वसाधारण लोग भी उसे पसंद करते हैं।

सारांश रूपमें हम कह सकते हैं कि जनसंचार के तकनीकी क्षेत्र में हिंदी भाषा का अभूतपूर्व योगदान हैं जो दिनों–दिन बढ़ता ही जा रहा हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) अग्रवाल (डॉ.) सुरेश, जनसंचार माध्यम, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2005
2) दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, सत्यप्रकाश ओझा, ज्ञानगंगा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001
3) प्रिण्ट मीडिया लेखन, प्रो. जैन, मंगलदीप प्रकाशन, जयपुर
4) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, प्रो. जैन, मंगलदीप प्रकाशन, जयपुर
5) टेलीविजन लेखन : सिद्धांत और प्रयोग, नागर कुमुद, भारत प्रकाशन, लखनऊ
6) मीडिया लेखन और संपादन कला, पाण्डेय अनुपम प्रसाद, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली.
7) संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग, पाण्डेय डॉ. लक्ष्मीकांत साहित्य रत्नालय, कानपुर
8) भारतीय प्रसारण : विविध आयाम, डॉ. मधुकर गंगाधर प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली
9) प्रसारण की विविध दिशाएँ, मंजुल मुरली मनोहर, साहित्य संगम, इलाहाबाद
10) मीडिया लेखन, मोहन सुमित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली